वस्तु बुद्धी की अपेक्षा नही रखती। वो अपना फल देती है ये सिद्धांत ठीक से समझना जरूरी है।

एक अपढ़ गंवार दवाई के बारे कुछ नही जानता जबकि एक डाक्टर उस दवाई का फार्म्युला आदि जानता है। दोनो बीमार होने पर उसी दवाई से ठीक हो जाते है। मतलब दवाई नामक वस्तु ने अपना काम जानने वाले पर या ना जानने वाले समान प्रकार से किया।

इसी प्रकार मन बीमार है। उसको दवाई की आवश्यकता है। वो कैसे मिलेगी? मन का काम है लगाव करना। मन का लगाव चार प्रकार से किया जा सकता है।
भगवान के अवतार काल में दो प्रकार से -
1 भगवान को भगवान जानकर जैसे देवकी को पता था कि उसका पुत्र श्रीकृष्ण भगवान है क्योंकि भगवान ने बालक बनने से पहले देवकी को अपना चार भुजा वाला रूप दिखाया था। वो गोलोक गयी क्योंकि उसका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

2. भगवान को भगवान न जानकर जैसे यशोदा मैया नही जानती थी की उसका पुत्र श्रीकृष्ण भगवान है। उसने श्रीकृष्ण को केवल अपना पुत्र मानकर प्यार किया था। वो भी गोलोक गयी क्योंकि उसका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

भगवान का अवतार काल न हो तो दो प्रकार से -
3 संसार में भगवान की भावना से जैसे लोग मूर्तिपूजा आदि करते है। मूर्ति तो पत्थर की होती है। लेकिन चिंतन अब यहा भगवान का हो रहा है।भगवान अपनी सर्वज्ञता तथा सर्वव्यापकता के कारण आपकी भावना जानते है। मीराबाई, धन्ना जाट आदि गोलोक गये क्योंकि उनका लगाव शुद्ध व्यक्तित्व

में हुआ था इसलिए शुद्ध वस्तु ने शुद्ध फल दिया।

4 संसार में संसार की भावना से जैसे आमतौर से लोग संसारी वस्तु में लगाव करते है। माँ, बाप, भाई, बहन आदि में संसारी व्यक्ति जानकर प्यार या दुश्मनी करते है। ऐसे लोगों को गोलोक नही मिलता क्योंकि इनका लगाव अशुद्ध व्यक्तित्व में हुआ था इसलिए अशुद्ध वस्तु ने अशुद्ध फल दिया तथा ये सब चौरासी लाख में घुमते रहते है।

तो शुकदेव के समझाने पर परीक्षित का शंका निरसन हो गया और रास के बारे में बताना शुरू किया।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132